The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-01, April-2025
www.theresearchdialogue.com

"बुद्ध के गृहत्याग का ऐतिहासिक सच"

सौरभ दुबे

एम्.ए. (इतिहास), इग्नू, नेट

Saurav.dubey009@gmail.com

सारांश:

बचपन में बुजुर्गों के मुख से महात्मा बुद्ध के बारे में यह कहानी सुनी थी कि भगवान बुद्ध ने एक बीमार व्यक्ति, एक बूढ़े और फिर एक मुर्दे को देखकर अपना घरबार त्याग दिया था। राष्ट्रीय कवि स्वर्गीय मैथिलीशरण गुप्त ने अपने 'यशोधरा' नामक प्रसिद्ध चंपूकाव्य की मुख्य पंक्तियां "देखी मैंने आज जरा, हो जावेगी क्या ऐसी ही मेरी यशोधरा"1 अथवा फिर "सखि, वे मुझसे कह कर जाते"2 को लिखकर बुद्ध के संसार से विरक्त हो जाने के भाव को प्रकट किया है। कविवर गुप्तजी ने अपने उसी 'यशोधरा' काव्य के कथा - सूत्र में स्पष्ट लिखा है कि एक दिन एक रोगी को, दूसरे दिन एक वृद्ध को और तीसरे दिन एक मृतक को देखकर संसार की इस गति पर गौतम को बड़ी ग्लानि एवं करुणा आई और उन्होंने इसका उपाय खोजने के लिए एक दिन अपना घरबार छोड़ दिया !3

बुजुर्गों के जेहन में बुद्ध के घरबार त्यागने की यह कपोल - कल्पित कहानी जिसने भी भरी वह अलग बात है किंतु गुप्तजी जैसे राष्ट्रीय कवि ने बुद्ध के गृहत्याग की कथा का ताना-बाना अपनी कलम से जिस तरह बुना वह तो बड़ा ही मनोरंजक है !...पहले दिन बुद्ध के सामने एक रोगी आया, उसके अगले दिन एक बूढ़ा आया, फिर तीसरे दिन एक मरा हुआ व्यक्ति आया अथवा उसे लाया गया; गोया बुद्ध को संसार से विरक्त करने का यह सुनियोजित षड्यंत्र हो ! ऐसा लगता है जैसे वह बुद्ध की फिल्म की कोई शूटिंग हो और कोई बड़ा घाघ डायरेक्टर उस फिल्म को डायरेक्ट कर रहा हो !

आज भी भारत का आमजन यही समझता है कि बुद्ध ने एक बीमार व्यक्ति, एक बूढ़े और एक मुर्दे को देखकर अपना घरबार त्यागा था। ऐसा प्रतीत ही नहीं होता बल्कि यह एकदम सोलह आने सच है कि किसी बड़े गैंग ने ही अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बुद्ध के गृहत्याग की ऐसी भ्रामक कहानी गढ़ी ताकि भारत की भोली - भाली जनता स्वर्ग और

नरक के डर से पंडे - पुजारियों के जाल में फंसी रहे और धर्म तथा भगवान के नाम पर चंदाउगाही करने वालों का गोरखधंधा चलता रहे।

बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ गौतम था। सिद्धार्थ का अर्थ है --मन की सभी इच्छाएं पूर्ण होना। गौतम उनका कुलनाम था। सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की आयु में गृहत्याग किया था। उस समय उनका पालन - पोषण करने वाली उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी और उनके पिता शुद्धोदन की आयु लगभग 70 वर्ष के आसपास थी। दोनों को बूढ़ा होता हुआ सिद्धार्थ ने नजदीक से और भली - भांति देखा होगा। इतने बड़े राजघराने में पारिवारिक सदस्यों के अलावा उनके नौकर- चाकर भी रहे होंगे। उनमें कोई- न- कोई बीमार भी अवश्य होता रहा होगा। सिद्धार्थ के जन्म के सातवें दिन उनकी माता महामाया का निधन हो गया था। आठ वर्ष की आयु पूर्ण होने पर सिद्धार्थ की शिक्षा आरंभ हुई। बचपन से ही सिद्धार्थ कुशाग्र बुद्धि के धनी थे, तब क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं हुआ होगा कि उनकी मां का निधन हो चुका है और मृत्यु जगत का शाश्वत सत्य है ? सोलह वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवाह बड़े धूमधाम से दंडपाणि कोलिय की पुत्री यशोधरा से हुआ। विवाह - उत्सव में हर आयु के लोग शामिल हुए होंगे। विवाह के काफी समय बाद वह एक पुत्र के पिता बने। क्या उस समय तक उन्होंने अपनी पत्नी के शारीरिक उतार-चढ़ाव को नहीं देखा होगा ? नौ वर्ष की आयु में ही सिद्धार्थ वप्रमंगल उत्सव (धान रोपने के प्रथम दिन मनाया जाने वाला उत्सव जिसमें प्रत्येक शाक्य को अपने हाथ से हल चलाना पड़ता था) में गए थे। प्रमाण बताते हैं कि सिद्धार्थ ने अपने हाथों से खेत में हल चलाया था। उनके पिता शुद्धोदन के अनेक खेत थे जिनमें अनेक मजदूर काम करते थे। मजदूरों में भी हर उम्र के आदमी शामिल रहते थे। शुद्धोदन के राज - परिवार में संन्यासियों का आना-जाना लगा रहता था। उन संन्यासियों में भी हर उम्र का संन्यासी रहा होगा।

यह सर्वमान्य है कि सिद्धार्थ 32 महापुरुषीय गुणों से युक्त थे। हैरत में डालने वाली बात यह है कि ऐसा व्यक्ति अपनी आयु के 29 साल तक यही न समझ पाया कि आदमी बीमार क्यों होता है, क्यों बूढ़ा होता है और क्यों मरता है ! यह बड़े खेद की बात है कि बुद्ध के गृहत्याग की भ्रामक कथाएं गढ़ ली गईं और उन मनगढ़ंत कहानियों पर लोग विश्वास करने लगे ! जरा सोचिए, बुद्ध को गृहत्याग के लिए 29 साल की दीर्घावधि तक इंतजार करने की क्या जरूरत थी ?

सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन शाक्यवंशी राजा थे। कपिलवस्तु उनकी राजधानी थी। उनका विवाह देवदह निवासी कोलियवंशी अंज्जन और सुलक्षणा की पुत्री महामाया से हुआ था। महामाया के गर्भ से ईसापूर्व 563 में वैशाख पूर्णिमा के दिन सिद्धार्थ का जन्म हुआ था; किंतु उनके जन्म के सातवें दिन ही महामाया का देहावसान हो गया। इसलिए सिद्धार्थ का पालन - पोषण उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया था। यह महामाया की बड़ी बहन और राजा शुद्धोदन की

दूसरी पत्नी थी। सिद्धार्थ बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले, दूरदर्शी, दयालु और अतिसंवेदनशील थे। अमीर - गरीब का अंतर उन्हें सदैव दु:खी करता था। वह सदैव यही चिंतन करते रहते थे कि क्यों एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का शोषण करता है और क्यों एक - दूसरे को मारता है। इस प्रकार वह नितांत समान भाईचारा और प्रेमभाव के प्रबल पक्षपाती थे !

पहले कहा जा चुका है कि सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन एक शाक्यवंशी राजा थे। शाक्य राज्य भारत के उत्तर - पूर्व कोने में था। यह एक स्वतंत्र राज्य था किंतु आगे चलकर कोसल - नरेश ने इसे अपने अधिकार - क्षेत्र में शामिल कर लिया था। इसका परिणाम यह निकला कि स्वतंत्र होते हुए भी शाक्य राज्य कोसल- नरेश की स्वीकृति के बिना मृत्युदंड अथवा निर्वासन जैसे गंभीर मसलों में अपने राजकीय अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकता था। अन्य मामलों में शाक्यों को स्वयं निर्णय लेने के अधिकार प्राप्त थे। चूंकि उस समय कोसल और मगध दो शक्तिशाली साम्राज्य थे। इस कारण उनकी साम्राज्यवादी नीति से शाक्य जैसे छोटे-छोटे राज्यों को अपनी स्वतंत्रता छिन जाने का खतरा बराबर बना रहता था।

शाक्यों का अपना एक संघ था जिसे 'शाक्य - संघ' के नाम से जाना जाता था। संघ के नियम बहुत कड़े थे जिन्हें संघ के प्रत्येक सदस्य को मानने पड़ते थे। बीस वर्ष की आयु होने पर प्रत्येक युवा को संघ में दीक्षित होकर उसका सदस्य बनना पड़ता था। अतः बीस वर्ष की आयु पूरी होने पर सिद्धार्थ भी शाक्य - संघ के सदस्य बन गए थे। आनंद श्रीकृष्ण ने अपनी पुस्तक "गौतम बुद्ध और उनके उपदेश" में लिखा है कि शाक्य - संघ का सदस्य बनने के आठ वर्षों तक सिद्धार्थ सबके प्रिय सदस्य रहे।

शाक्यों के राज्य से सटा हुआ कोलियों का राज्य था। रोहिणी नदी दोनों राज्यों के बीच विभाजन - रेखा का काम करती थी। दोनों राज्य इस नदी से सिंचाई करते थे। रोहिणी के जल का पहले कौन और कितना उपयोग करेगा इसे लेकर शाक्यों और कोलियों में अक्सर विवाद हो जाता था। यह विवाद कभी-कभी युद्ध की स्थिति पैदा कर देता था।

सिद्धार्थ की आयु 28 वर्ष की हो चुकी थी। उस वर्ष भी रोहिणी का जल झगड़े का कारण बना और स्थिति युद्ध के कगार तक आ चुकी थी। संघ की सभा बुलाई गई। सिद्धार्थ और शाक्य सेनापति के बीच समस्या को हल करने के उपाय को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गया। सेनापति युद्ध के लिए तत्पर था जबकि सिद्धार्थ युद्ध नहीं चाहते थे। सिद्धार्थ का मत था कि युद्ध कभी किसी समस्या का हल नहीं होता। उनके मत में परस्पर एक - दूसरे का नाश करने में बुद्धिमानी नहीं है। सिद्धार्थ गौतम का मत था कि झगड़ा शाक्य के आदमियों ने ही शुरू किया था इसलिए गलती शाक्यों की भी है। उन्होंने सुझाव दिया कि शाक्यों व कोलियों में से दो-दो आदमी चुने जाएं, वे चारों मिलकर एक पांचवें आदमी का चयन करें। वे पांचो पंच मिलकर झगड़े का निपटारा कर दें, जबकि सेनापति का कहना था कि जब तक कोलियों को

कड़ा दंड नहीं दिया जाता तब तक यह मामला समाप्त नहीं होगा। सेनापति का तर्क था कि ब्राह्मणों का धर्म है यज्ञ करना, क्षत्रियों का धर्म है युद्ध करना, वैश्यों का धर्म है व्यापार करना और शूद्रों का धर्म है सेवा करना; हर किसी को अपना-अपना धर्म निभाने में ही पुण्य है। तब सिद्धार्थ ने कहा -- जहां तक मैं समझ सका हूं, धर्म तो इस बात को हृदयंगम करने में है कि बैर से बैर कभी शांत नहीं होता। वह केवल अबैर से शांत होता है। आग से आग नहीं बुझ सकती, वह पानी से ही बुझ सकती है। झगड़ा झगड़ा से नहीं बल्कि आपसी बातचीत से ही सुलझ सकता है

शाक्य-संघ सेनापति के विचार मानते हुए युद्ध के पक्ष में था। शाक्य - संघ को सिद्धार्थ का मत मंजूर नहीं था और शाक्य - संघ का फैसला सिद्धार्थ को मंजूर नहीं था। शाक्य - संघ के नियमों के अनुसार यदि कोई सदस्य शाक्य - संघ के खिलाफ जाता तो संघ उसके परिवार के सामाजिक बहिष्कार का निर्णय कर सकता था, उसके परिवार के खेतों को जब्त कर सकता था, उस व्यक्ति को दंडित कर सकता था और देश - निकाला दे सकता था। सिद्धार्थ गौतम ने सुझाव दिया कि उनके परिवार का सामाजिक बहिष्कार न किया जाए, न ही राजा शुद्धोदन की संपत्ति जब्त की जाए। वह स्वयं दंड भोगने को तैयार हैं। लेकिन शाक्य - संघ के समक्ष समस्या यह थी कि कोसल - नरेश को इस बात का पता लगने पर वे शाक्य-संघ के खिलाफ कार्यवाही कर सकते थे और शाक्यों का राज्य हथिया सकते थे। इसलिए सिद्धार्थ गौतम ने स्वयं यह सुझाव दिया कि यदि वे परिब्राजक बन जाएं और देश के बाहर चले जाएं तो एक प्रकार से देश - निकाला भी हो जाएगा और शाक्य - संघ को उसके लिए कोसल - नरेश दंडित भी नहीं करेंगे। आखिरकार सिद्धार्थ ने प्रब्रज्या (पालि भाषा में पबज्या) अभिनिष्क्रमण का निर्णय लिया। गलत बहुमत के आगे झुकने के बजाय सिद्धार्थ ने परिब्राजक का जीवन व्यतीत करने का निर्णय लिया।4

सिद्धार्थ (बुद्ध) के गृहत्याग के बारे में यह भी बिलकुल सच नहीं है कि सिद्धार्थ एक रात ,जब परिवार के सभी सदस्य सोए हुए थे , उस समय चुपचाप, बिना किसी को बताए अपनी पत्नी, पुत्र और वृद्ध मां-बाप को छोड़कर चले गए। कविवर मैथिलीशरण गुप्तजी ने तो अपने 'यशोधरा' काव्य में यह गीत ही रच दिया --'सखि, वे मुझसे कह कर जाते !' 5 यही नहीं, गुप्तजी ने 'अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी' 6 कहकर जिस यशोधरा (यशोधरा ही नहीं अपितु समस्त नारी-जाति) को अबला सिद्ध करने की कोशिश की है उसी यशोधरा ने सिद्धार्थ को गृहत्याग के लिए उत्साहपूर्वक विदा किया था। बहरहाल, सच यह है कि जिस दिन सिद्धार्थ ने गृहत्याग किया उस समय उन्होंने अपने पूरे परिवार के साथ वार्तालाप किया था। इसके प्रमाण में हम आनंद श्रीकृष्ण की पुस्तक 'गौतम बुद्ध और उनके उपदेश' में प्रकाशित वार्तालाप 7 का अंश प्रस्तुत कर रहे हैं। यह वार्तालाप डॉक्टर आंबेडकर की 'भगवान बुद्ध और उनका धम्म' नामक पुस्तक के "सिद्धार्थ गौतम : बोधिसत्व किस प्रकार बुद्ध बने" शीर्षक में भी देखा जा सकता है।8

वार्तालाप इस तरह है :

सिद्धार्थ : मैं आशा करता हूं कि इतना तो आप समझते ही होंगे कैसे परिस्थिति को और अधिक बिगड़ने से बचा लिया। मैं सत्य और न्याय के पथ से विचलित नहीं हुआ और सत्य और न्याय का आग्रह करने का जो भी दंड था मैंने उसे अपने ही सिर पर ले लिया।

शुद्धोदन : तुमने यह नहीं सोचा कि इससे हम पर क्या बीतेगी ?

सिद्धार्थ : लेकिन इसी कारण तो मैंने प्रब्रज्या लेना स्वीकार किया है। जरा सोचिए तो सही, यदि शाक्यों ने हमारे खेत जब्त करने की आज्ञा दे दी होती तो क्या हुआ होता ?

शुद्धोदन : लेकिन तुम्हारे बिना हम इन खेतों को रखकर क्या करेंगे ? सारा परिवार ही शाक्य जनपद का परित्याग कर देश से बाहर क्यों न चल दे ?

प्रजापति गौतमी : तुम हम सबको इस प्रकार छोड़कर अकेले कैसे जा सकते हो ?

सिद्धार्थ : मां ! क्या तुमने हमेशा क्षत्राणी होने का दावा नहीं किया ? इस प्रकार दुखी होना तुम्हारे लिए अशोभनीय है। यदि मैं युद्धभूमि में गया होता और वह जाकर मर गया होता तो तुम क्या करतीं ? क्या तुम तब भी इसी प्रकार दु:खी हुई होतीं ?

प्रजापति गौतमी : नहीं, यह तो एक क्षत्रिय के योग्य होता। लेकिन अब तुम लोगों से दूर जंगल में रहने जा रहे हो। हम यहां शांत कैसे रह सकते हैं ? मैं यही कहती हूं कि तुम हमें भी साथ ले चलो।

सिद्धार्थ : मैं आप सबको कैसे साथ ले चल सकता हूं ? नंद केवल एक बच्चा है। मेरे पुत्र राहुल का अभी जन्म ही हुआ है। क्या आप इन्हें छोड़कर मेरे साथ आ सकती हैं ?

प्रजापति गौतमी : हम सब शाक्यों का देश छोड़कर कोसल- नरेश की अधीनता में रहने के लिए कोसल जनपद में जा सकते हैं।

सिद्धार्थ : लेकिन मां ! शाक्य क्या कहेंगे ? क्या वे इसे देशद्रोह न समझेंगे ? फिर मैंने वचन दिया है कि मैं वचन या कर्म से कोई ऐसी बात न कहूंगा, न करूंगा कि जिससे कोसल - नरेश को शाक्यों के खिलाफ कुछ करने का मौका मिल सके।.... यह सही है कि मुझे अकेले जंगल में रहना होगा। लेकिन कोलियों के विरुद्ध लड़ाई में हिस्सा लेने और जंगल में रहने, इन दोनों में से अधिक श्रेयस्कर क्या है ?

शुद्धोदन : लेकिन इतनी जल्दी किसलिए ? शाक्य-संघ ने अभी कुछ समय के लिए लड़ाई को स्थगित कर दिया है। हो सकता है कि युद्ध कभी छिड़े ही नहीं ! तुम अपनी प्रब्रज्या भी क्यों स्थगित नहीं करते ? हो सकता है कि शाक्य-संघ तुम्हें यहां बने रहने की ही अनुमति दे दे ?

सिद्धार्थ : यह भी संभव है कि मेरे प्रब्रज्या ग्रहण कर लेने पर शाक्य -संघ अपनी युद्ध की घोषणा को वापस ले ले किन्तु यह सब कुछ मेरे पहले प्रब्रज्या ले लेने पर ही निर्भर करता है। मैंने वचन दिया है और मुझे उसे अवश्य पूरा करना चाहिए। वचन - भंग का बड़ा बुरा परिणाम हो सकता है, हमारे लिए भी और शांतिपक्ष के लिए भी।...मुझे आज्ञा दो और अपना आशीर्वाद। जो कुछ हो रहा है, अच्छे के लिए ही हो रहा है।

यशोधरा : कपिलवस्तु में शाक्य- संघ की सभा में जो कुछ हुआ वह सब मैं सुन चुकी हूं।

सिद्धार्थ : यशोधरा ! मुझे बताओ कि तुम्हें मेरा प्रब्रजित होने का निर्णय कैसा लगा है ?

यशोधरा : यदि मैं भी तुम्हारी स्थिति में होती तो भी मैं भी वही करती, निश्चय ही मैं कोलियों के विरुद्ध छेड़े जानेवाले युद्ध में हिस्सा नहीं लेती। तुम्हारा निर्णय ठीक है। तुम्हें मेरी अनुमति और समर्थन है। मैं भी तुम्हारे साथ प्रब्रजित हो जाती। यदि मैं नहीं हो रही हूं तो इसका एकमात्र यही कारण है कि मुझे राहुल का पालन - पोषण करना है। अपने माता-पिता तथा अपने पुत्र की चिंता न करना। मैं जब तक जीऊंगी, सबकी देखभाल करूंगी। अब मैं इतना चाहती हूं कि अपने प्रिय संबंधियों को छोड़कर जो तुम प्रब्रजित होने जा रहे हो, तुम किसी ऐसे नए पथ की खोज कर सको जो मानवता के लिए कल्याणकारी हो।

यद्यपि सिद्धार्थ के परिब्राजक बन जाने के कुछ समय उपरांत शाक्यों और कोलियों के मध्य युद्ध का खतरा पूरी तरह समाप्त हो गया था और सिद्धार्थ अपने घर वापस लौट सकते थे किंतु उनकी समस्या ने व्यापक रूप धारण कर लिया था। उन्हें सामाजिक संघर्ष की समस्या का हल निकालना था। उन्हें ऐसे रास्ते की खोज करना था जिससे लोगों के दु:खों को दूर किया जा सके। उनकी इच्छा संसार के समस्त दु:खों का मूल कारण और उनका निवारण ढूंढने की थी।

संदर्भ :

1 . यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ 13

2. वही, पृष्ठ 24

3. वही, कथासूत्र, पृष्ठ 6

4. गौतम बुद्ध और उनके उपदेश, आनंद श्रीकृष्ण, पृष्ठ 19

5. यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ 24

6. वही, पृष्ठ 47

7. गौतम बुद्ध और उनके उपदेश, आनंद श्रीकृष्ण, पृष्ठ 22 - 24

8. भगवान बुद्ध और उनका धम्म, देखिए, "सिद्धार्थ गौतम : बोधिसत्व किस प्रकार बुद्ध बने", डॉक्टर आंबेडकर, पृष्ठ 29,30

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-01, April-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number April-2025/08
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सौरभ दुबे

for publication of research paper title

"बुद्ध के गृहत्याग का ऐतिहासिक सच"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and
E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-01, Month April, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY